एलन ऑक्टेवियन ह्यूम (Allan Octavian Hume 1829 – 1912) (1)

ए० ओ० ह्यूम का जन्म सन 1829 में हुआ था। वे स्कॉटलैण्ड के निवासी थे। वे 1870 से 1879 तक भारत सरकार के सचिव रहे परन्तु उनका दृष्टिकोण अन्य अंग्रेज अधिकारियों से हटकर भारतीयों के प्रति प्रेम एवं भारतीयों की सामाजिक, आर्थिक, नैतिक स्थिति की सुधारना था। वे ब्रिटिश सरकार के मित्र थे। भारतीयों के प्रति प्रेम एवं सहानुभूति रखने के कारण ही उन्हें 1882 में सरकारी नौकरी से रिटायर कर दिया गया। ह्यूम ने सरकारी नौकरी से रिटायर होने के बाद भारत में सामाजिक सुधार के आन्दोलन के लिए एक देशव्यापी संस्था की आवश्यकता पर विचार किया। उन्होंने अपने ये विचार वायसराय लार्ड डफरिन के सामने रखे। लार्ड डफरिन ने रैली संस्था के स्थान पर एक राजनीतिक संगठन की स्थापना की इच्छा व्यक्त की जो भारत में उस तरह कार्य करे जैसे ब्रिटिश संसद में विपक्ष करता है। लार्ड डफरिन का ऐसे संगठन की स्थापना से उद्देश्य प्रशासन के संबंध में भारतीयों की इच्छा जानने का था, जिससे भारतीय विरोध को समझा जा सके और आवश्यक कार्यवाही की जा सके।

1883 में मि० ह्यूम ने अखिल भारतीय संस्था की स्थापना के लिए एक राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया और इसी वर्ष मार्च के महीने में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकों के नाम एक खुला पत्र लिखा। पत्र में ऐसे 50 स्नातकों को आने के लिए ललकारा जो मातृभूमि की सेवा कर सके। इस पत्र की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार थी — "आपके कन्धों पर रखा हुआ जुआ तब तक विद्यमान रहेगा जब तक आप इस ध्रुव सत्य को समझकर उसके अनुसार कार्य करने को तैयार न होंगे कि आत्म बलिदान व निःस्वार्थ कर्म ही स्थायी सुख और स्वतंत्रता के अचूक मार्ग दर्शक है।

मि० ह्यूम ने उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए 1884 में

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

कानडेन तथा उसके बहादुर साथियों की तरह आजादी, न्याय तथा अपने अधिकारों के लिए जो महासंग्राम हम छेड़ने जा रहे है, उसका वह सैनिक बन जाए।" उक्त घोषणा करने वाला व्यक्ति साम्राज्य का समर्थक नहीं हो सकता।

मि० ह्यूम ने अपनी मृत्यु (1912) तक कॉंग्रेस में रहकर भारत की सेवा की। इस प्रकार ह्यूम को भारतीय प्रशासन में कुछ दोष प्रकट नजर आ रहे थे और उन्हें वे वैधानिक तरीकों से ठीक कराना चाहते थे। इस प्रकार ह्यूम कॉंग्रेस के द्वारा ब्रिटेन तथा भारत दोनों का कल्याण चाहते थे और उनमें मधुर सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे।

यद्यपि लाला लाजपत राय ने कॉंग्रेस की स्थापना का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करना बताया है, फिर भी उन्हें ह्यूम के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा है कि "ह्यूम स्वतंत्रता के पुजारी थे और उनका हृदय भारत की निर्धनता और दुर्दशा पर रोता था। वे इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि कोई भी शासन चाहे वह देशी हो या विदेशी, वह बिना किसी दबाव के जनता की माँगों को पूरा नहीं करता है।"

अन्त में गोपाल कृष्ण गोखले के शब्द उल्लेखनीय है जो उन्होंने 1913 में लन्दन में 'ह्यूम स्मारक' सभा में बोलते हुए कहे थे, "कोई भी भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना नहीं कर सकता था। यह बात भुला दी जाय कि इतने बड़े कार्य के लिए ह्यूम जैसे प्रभावशाली व्यक्तित्व की आवश्यकता थी, किसी भारतीय का ऐसा व्यक्तित्व होता और वह अब आन्दोलन को चलाने के लिए आगे आ जाता तो सरकार उसे ऐसी संस्था बनाने नहीं देती। राजनीतिक आन्दोलन उन दिनों ऐसी संशय की दृष्टि से देखा जाता था कि कॉंग्रेस का जन्म दाता इतना महान अंग्रेज और प्रमुख गैर-सरकारी व्यक्ति न होता तो, सरकार इस आन्दोलन के दमन के लिए अवश्य कोई उपाय ढूंढ निकालती।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष-राजनीति विज्ञान
डी.के. कालेज, डुमराँव
दिनांक 30/07/2020

"इण्डियन नेशनल यूनियन" नामक संस्था की स्थापना की। इसके बाद वे राय-मशविरा के लिए इंग्लैण्ड चले गये, तत्पश्चात उक्त संस्था का नाम बदलकर 'Indian National Congress' रखा। इस कॉंग्रेस का पहला अधिवेशन 28 दिसम्बर 1885 को बम्बई में कलकत्ता के प्रसिद्ध बैरिस्टर व्योमेशचन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ जिसमें मि० ह्यूम कॉंग्रेस के संस्थापक (Secretary) बने।

कुछ विचारकों का कहना है कि मि० ह्यूम ने कॉंग्रेस की स्थापना ब्रिटिश साम्राज्य के हितों की रक्षा के लिए की थी, भारतीयों का हित तो गौण था। यदि इसको सही मान भी लिया जाय तो भी यह महत्वपूर्ण बात है कि उन्होंने कॉंग्रेस की स्थापना की और वह ऐसे समय में जबकि अंग्रेजों का किसी भी तरह विरोध करना असम्भव कार्य था। आरंभ में यह संस्था ह्यूम, विलियम वैडरबर्न आदि अंग्रेजों के सहयोग के कारण ही सरकार के प्रकोप से बच सकी। यद्यपि कॉंग्रेस की स्थापना में ह्यूम का उद्देश्य ब्रिटेन और भारत के अच्छे सम्बन्धों को बनाये रखना भी था, लेकिन इस बात को भी स्वीकार करना पड़ेगा कि इनमें भारतीय हित की भावना भी निहित थी। लाला लाजपत राय के शब्दों में ह्यूम स्वतंत्रता के पुजारी थे और उनका हृदय भारत की निर्धनता तथा दुर्दशा पर रोता था। ह्यूम साहब का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य का पक्ष-पोषण नहीं, बल्कि ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भारतीय जनता को वैधानिक रूप से संगठित करना था। इसका प्रमाण यह है कि उन्होंने 1888 के कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर भारतीय जनता को 'एण्टी कॉर्न लीग' की पद्धति पर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करने के लिए आह्वान करते हुए अपना मत व्यक्त किया था कि "हमारे शिक्षित भारतीयों ने पृथक-पृथक रूप से, हमारे अखबारों ने व्यापक रूप से तथा हमारी राष्ट्रीय महासभा के समस्त प्रतिनिधियों ने एक स्वर से सरकार को समझाने की चेष्टा की है, किन्तु सरकार ने, जैसा कि प्रत्येक स्वेच्छाचारी सरकार का रवैया होता है, समझने से इंकार कर दिया। अब हमारा काम यह है कि हम देश में अलख जगाएँ, ताकि हर भारतवासी, जिसने भारतमाता की छाती का दूध पिया है, हमारा साथी, सहयोगी तथा सहायक बन जाए और यदि आवश्यकता पड़े तो